इंटरनेट को कौन चलाए?

पिछले 30 सालों में किसी ने यह सवाल नहीं पूछा कि इंटरनेट को कौन चलाता है? लेकिन अब यह सवाल उभर कर आ रहा है।

इंटरनेट को इस तरह बनाया गया है कि यह किसी भी क्षति को झेल सकता है और सूचनाओं का आदान-प्रदान करने का उम्दा माध्यम है। इलेक्ट्रॉनिक फ्रंटियर फाउण्डेशन के संस्थापक जॉन गिलमोर का कहना है कि यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जिसके ज़रिए कोई भी एक कमरे में बैठकर कारोबार कर सकता है और अरबों लोगों को जोड़ सकता है। मगर अब शायद इसके दिन लद गए हैं।

हाल ही में दुबई में हुए अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार सम्मेलन (WCIT) में 2000 लोगों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्देश्य था कि 1988 में बने अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार नियमन को अपडेट किया जाए। अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ का गठन 1865 में हुआ था। 193 देशों की सरकारें और कई कंपनियां इसकी सदस्य हैं। सिविल सोसायटी ग्रुप केवल उसी स्थिति में प्रतिनिधित्व करते हैं जब उनके देश की सरकार उन्हें इसके लिए चुने। कुछ चुनती हैं, कुछ नहीं। यह विवाद का एक मुद्दा है।

गूगल के चीफ इंटरनेट प्रचारक और TCP/IP इंटरनेट प्रोटोकॉल के सह-खोजकर्ता विन्टॉन सर्फ का मत है कि दुबई में हुए फैसले इंटनेट पर सरकारी शिकंजे को कस सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार नियमन को संशोधित करने की मांग अप्रत्याशित नहीं है। ज़रा देखें कि 1988 से अब तक क्या-क्या घटा है: इंटरनेट, वाई-फाई, ब्रॉडबैंड, मोबाइल टेलीफोन्स की पीढ़ियां, इंटरनेशनल डैटा सेंटर, कंप्यूटरों का समूह। 1988 में इंटरनेट के लिए कुछ ही टेलीफोन कंपनियां थीं, लेकिन आज सैकड़ों कंपनियां हैं।

कुछ महीनों पहले से अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार सम्मेलन पर विवाद छिड़ा हुआ है। मई में पूरे विश्व से 30 डिजिटल एजेंसियों और मानव अधिकार संस्थाओं ने अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ के समक्ष अपनी तीन मांगें प्रस्तुत कीं: पहली, सम्मेलन से सम्बंधित सभी प्रारंभिक दस्तावेज़ों और प्रस्तावों को सार्वजनिक किया जाए। दूसरी, सम्मेलन को सिविल सोसायटी के लिए खोला जाए। तीसरी, सभी सदस्य देशों से कहा जाए कि वे सम्बंधित अशासकीय संस्थाओं के विचार एकत्रित करें।

वर्जीनिया स्थित जॉर्ज मेसन युनिवर्सिटी के दो विद्वानों जेरी ब्रिटो और एली डोरेडो ने जून में एक साइट बनाई WCIT leaks और उस पर सारे दस्तावेज़ मांगे, जो मिले उनकी प्रति वहां डाल दी। कुछ अंतराल के बाद नवम्बर के अंत तक अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ की सदस्य एक कंपनी ने अपनी साइट पर बहुत-सी चीज़ें पोस्ट कीं।

ग्रीनपीस और अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन महासंघ ने एक अभियान *स्टॉप दी नेट ग्रैब* (नेट की छीना-छपटी बंद करो) चलाया है। इसमें यह मांग की गई है कि अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार सम्मेलन में बाहरी लोगों को शामिल किया जाए।

इस अभियान में ऐसी संस्थाएं शामिल हैं जिनका इंटरनेट से कुछ लेना-देना नहीं है। वे इसकी आज़ादी का बचाव कर रहे हैं। इससे पता लगता है कि कैसे इंटरनेट तकनीक आज हमारी प्रारंभिक ज़रूरत बन गई है।

युरोप की संसद ने एक प्रस्ताव पारित किया था जिसमें कहा गया था कि इंटरनेट को संभालने के लिए अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ उपयुक्त संस्था नहीं है। यू.एस. तो हमेशा से ही किसी भी तरह के नियमन के खिलाफ रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ के सचिव जर्नल हेमेडाउन टोरी की शांति बनाए रखने की सारी कोशिशें नाकामयाब रहीं। उन्होंने अक्टूबर में कहा था कि जो दो-तिहाई दुनिया इंटरनेट पहुंच से बाहर है, उसे शामिल करने के लिए राष्ट्र संघ का नेतृत्व ज़रूरी है।

दुबई सम्मेलन में प्रस्तुत प्रस्ताव दो मुद्दे उठाता है। पहला है सेंसरशिप और निगरानी। रूस जैसे देश इंटरनेट पर भेजी गई सामग्री की निगरानी करने के पक्ष में हैं।

दूसरा, वित्तीय। फिलहाल अंतर्राष्ट्रीय कॉल्स में सेटलमेंट फीस की व्यवस्था है। इसके अंतर्गत कॉल को शुरू करने वाले देश कॉल का समापन करने वाले ऑपरेटर देश को पैसा देते हैं। इंटरनेट पर सब अपने-अपने हिस्से के नेटवर्क का शुल्क देते हैं। एक नेटवर्क से दूसरे नेटवर्क पर सूचना के आवागमन के लिए कोई शुल्क वसूल नहीं करता। इस व्यवस्था का फायदा यह होता है कि नेटवर्क निष्पक्ष बना रहता है। हर सूचना पैकेट को बराबर मुस्तैदी से आगे बढ़ाया जाता है। यदि सेटलमेंट शुल्क लागू हुआ तो यह सबके लिए खुला अखाड़ा नहीं रह जाएगा जहां बिना अनुमति के कोई भी अपनी साइट बना सकता है।

सवाल है कि हमें इसकी कितनी चिंता करनी चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार नियामक कोई ऐसी संस्था नहीं है जो अपने नियम लागू करवा सके। मगर यदि कुछ देश निगरानी और नियंत्रण लागू करेंगे तो पूरी व्यवस्था पर असर होगा क्योंकि यह व्यवस्था आपस में पूरी तरह गूंथी हुई है। इसीलिए इतने लोग इस प्रक्रिया में शामिल होने को आतुर हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

इस अंक के चित्र निम्नलिखित स्थानों से लिए गए हैं -

page no. 02 - http://www.redorbit.com/news/health/1112758260/obesity-missing-protein-brown-fat-vs-white-fat-010613/

page no. 03 - http://img.wikinut.com/img/3kpzc5g20bn8cwy-/jpeg/0/The-Female-Anopheles-Mosquito.jpeg

page no. 03 - http://www.element14.com/community/servlet/JiveServlet/showImage/38-9620-105276/flee2.JPG

page no. 07 - http://www.aoc.nrao.edu/epo/puente/views/vlaviews.index.html

page no. 11 - http://www.osdd.net/news-updates/pmmentionsosddinthe99thannualsessionoftheindiansciencecongress

page no. 18 - http://www.birdingworld.co.uk/images/650_3RbShrikeStiffkeyOct.jpg

page no. 19 - http://www.nidokidos.org/userpix/38570_01_135.jpg

page no. 19 - http://www.birdfinders.co.uk/images/nepal/black-drongo-nepal-2008.jpg

page no. 20 - http://1.bp.blogspot.com/-Yq4cOE-It1s/T1DpgeTXysI/AAAAAAAAE0E/N4hFWx0wXFA/s1600/IMG_0619.JPG

page no. 20 - http://www.girisholeti.com/photos/Pied%20Bushchat-1338718964.jpg

page no. 21 - http://orientalbirdimages.org/images/data/jerdons_bushchat14.jpg

page no. 30 - http://www.binbrain.info/data/media/13/Indian_Black_Bear_1.jpg

page no. 32 - https://www.lsstcorp.org/ahm2012/sites/default/files/ahm2012/sites/default/files/images/Comet.jpg

page no. 33 - http://us.123rf.com/400wm/400/400/neelsky/neelsky1109/neelsky110900295/10731793-great-indian-one-horned-rhinoceros-at-kaziranga-national-park-in-assam-state.jpg

page no. 34 - http://www.planetstillalive.com/wp-content/themes/viuu/timthumb.php?src=http://www.planetstillalive.com/wp-content/uploads/2012/06/DSC_4442-1024x680.jpg&w=360&a=c&q=75